Major - Semester - II 2025-2027 - Date - 20/02/26.

Commons theory -

कैनन सिद्धान्त की आलोचना - कैनन बार्ड सिद्धान्त आपात सिद्धान्त या हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त भी कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक स्थिति में हाइपोथैलेमस का आकार मुख्य रूप से कार्य करता है। कैनन तथा उनके अनुयायियों के प्रयोगों का वर्णन जेम्स-लांगे के सिद्धान्त के विरुद्ध पीछे किया जा चुका है। इस सिद्धान्त की अनुसार मस्तिष्क संवेगात्मक प्रक्रिया का केन्द्र है। जिसके दो भाग हैं। हाइपोथैलेमस और थैलेमस, जैसाकि चित्रों में प्रदर्शित किया गया है जिसके लगातार प्रवाह में संवेगात्मक गुण नीचे उनके मस्तिष्क में भेज देता है। जिससे तकिया विशेष में संवेग का अनुभव उत्पन्न होता है लेकिन प्रवाह के मस्तिष्क में भेजे जाने पर थैलेमस उसके कुछ भाग को कॉर्टेक्स तक लेजाता और प्रेसिडेन्ट को भेज देता है। इससे संवेग परिवर्तन हो जाता है।

जेम्स लांगे के सिद्धान्त से कैनन का सिद्धान्त अधिक उपयुक्त है यह तर्क बिल्कुल सत्य है। संवेगों के नियंत्रण में हाइपोथैलेमस का हाथ रहता है। इस सिद्धान्त की मान्यता से यह बात समझ में आ जाता है कि भूख-प्यास, नींद के बाद जैसे अवस्था, क्रोध की मनः, प्रतिक्रियाओं से संवेग पर प्रभाव क्यों नहीं पड़ता और परिणाम स्थिति में लाभ का मूल्यांकन देने से संवेग क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं यह भी मति कामिल और एकांगी है। क्योंकि लैश्ले के अपने प्रयोगों में दिखलाया है। कैनन सिद्धान्त के मतानुसार संवेग के समय पहचानने की लाभदायक नहीं की जा सकती।

Ajanta Oxford

CamScanner

वास्तव में संवेगों में सम्पोषणीयता के अतिरिक्त केवल संवेगों के अलग भागों का भी ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए संवेगों की अभिव्यक्तियों में सम्पोषणीयता की अपेक्षा पृथक मस्तिष्क का अधिक भाग रहता है।

जेम्स लांगे एवं कैनन के सिद्धान्त ने प्रमुख स्थिति न देते हुए लोपर ने भी एक सिद्धान्त का प्रस्तुतीकरण किया यह परिस्थिति में ऐसी स्थिति एवं उत्तेजनाओं का निर्माण करती जैसी लेकर आवश्यक उत्पन्न होगा,

इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगों में दो घटक होते हैं। आधारिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल संवेगात्मक अनुभव आपपाड़ि के वास्तव में उपरोक्त संकेतों के संदर्भ में परिभाषित मानसिक स्थिति की उत्पत्ति लाइलो का परिणाम होते हैं। आधारिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबलिंग संवेगात्मक अनुभव के पहले लेकिन एक ही समय में होते हैं।

जिस दिन तेजी से धड़कता होगा उस स्थिति में हम उत्तेजित, प्रसन्न या क्रोधित होते हैं। यह एक आधारिक उत्तेजना कहलाती होती है। मस्तिष्क बाह्य परिस्थिति से निकलने वाले संकेतों की व्याख्या करते हुए इस स्थिति की व्याख्या करता है। संवेगात्मक अनुभव के लिए उत्तेजित अवस्था की खोज लाइलो से निष्कर्ष होती है। 20/4/24